Hindi (B) Delhi (SET 3)

सामान्य निर्देशः
निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िये और उनका अनुपालन कीजिए :
(i) प्रश्न-पत्र चार खंडों में विभाजित किया गया है - क, ख, ग एवं घ। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) खंड क में प्रश्न अपठित गद्यांश पर आधारित हैं।
(iii) खंड ख में प्रश्न संख्या 2 से 6 तक प्रश्न हैं।
(iv) खंड ग में प्रश्न संख्या 7 से 11 तक प्रश्न हैं।
(v) खंड घ में प्रश्न संख्या 12 से 16 तक प्रश्न हैं।
(vi) यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
(vii) उत्तर संक्षिप्त तथा क्रमिक होना चाहिए और साथ ही दी गई शब्द-सीमा का यथासंभव अनुपालन कीजिए।
(viii) प्रश्न-पत्र में समग्र पर कोई विकल्प नहीं है। तथापि दो-दो अंकों वाले 2 प्रश्नों में, तीन-तीन अंक वाले 1 प्रश्न में और पाँच-पाँच अंकों वाले छह प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं। पूछे गए प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए सही विकल्प का ध्यान रखिए।
(ix) इनके अतिरिक्त, आवश्यकतानुसार, प्रत्येक खंड और प्रश्न के साथ यथोचित निर्देश दिए गए हैं।

Question: 1

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

मानव सभ्यता पर औद्योगिक क्रांति की धमक अभी थमी भी नहीं कि एक नई तकनीकी क्रांति ने अपने आने की घोषणा कर दी है। 'नैनो-तकनीक' के समर्थक दावा करते हैं कि जब यह अपने पूरे वज़ूद से आएगी तो धरती का नामोनिशान मिट जाएगा और नैनो रोबोट की स्वनिर्मित फ़ौज पूरी तरह क्षत-विक्षत शव को पलक झपकते ही चुस्त-दुरुस्त इंसान में तबदील कर देगी। दूसरी ओर नैनो-तकनीक की असीमित शक्ति से आशंकित इसके विरोधी इसे मिस्र के पिरामिडों में सोई ममियों से भी ज़्यादा अभिशप्त समझते हैं।

इन दोनों अतिवादी धारणाओं के बीच इतना अवश्य कहा जा सकता है कि हम तकनीकी क्रांति के एक सर्वथा नए मुहाने पर आ पहुँचे हैं जहाँ उद्योग, चिकित्सा, दूर संचार, परिवहन सहित हमारे जीवन में शामिल तमाम तकनीकी जटिलताएँ अपने पुराने अर्थ खो देंगी। इस अभूतपूर्व तकनीकी बदलाव के सामाजिक-सांस्कृतिक निहितार्थ क्या होंगे, यह देखना सचमुच दिलचस्प होगा।

आदमी ने कभी सभ्यता की बुनियाद पत्थर के बेडौल हथियारों से डाली थी। अनगढ़ शिलाओं को छीलकर उन्हें कुल्हाड़ों और भालों की शक्ल में ढाला और इस उपलब्धि ने उत्पादकता की दृष्टि से उसे दूसरे जंतुओं की तुलना में लाभ की स्थिति में ला खड़ा किया। औज़ारों को बेहतर बनाने का यह सिलसिला आगे कई विस्मयकारी मसलों से गुज़रा और औद्योगिक क्रांति ने तो मनुष्य को मानो प्रकृति के नियंत्रक की भूमिका सौंप दी। तकनीकी कौशल की हतप्रभ कर देने वाली इस यात्रा में एक बात ऐसी है, जो पाषाण युग के बेढब हथियारों से चमत्कारी माइक्रोचिप निर्माण तक एक जैसी बनी रही। हम अपने औज़ार, कच्चे माल को तराशकर बनाते हैं।

यह सर्वविदित तथ्य है कि सारे पदार्थ परमाणुओं से मिलकर बने हैं, लेकिन पदार्थों के गुण इस बात पर निर्भर करते हैं कि उनमें परमाणुओं को किस तरह सजाया गया है। कार्बन के परमाणुओं की एक खास बनावट से कोयला तैयार होता है, तो दूसरी खास बनावट उन्हें हीरे का रूप दे देती है। परमाणु और अणुओं को इकाई मानकर मनचाहा उत्पाद तैयार करना ही 'नैनो-तकनीक' का सार है।

(क) नैनो-तकनीक के समर्थकों ने क्या संभावनाएँ व्यक्त की हैं?

(ख) इसकी असीमित शक्ति से आशंकित विरोधियों का क्या मत है? इस पर टिप्पणी कीजिए।
(ग) 'नैनो–तकनीक' से आप क्या समझते हैं?
(घ) मानव प्रकृति का नियंत्रक कैसे बन गया?
(ङ) हीरे और कोयले में अंतर क्यों है?
(च) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

Solution:

(क) 'नैनो-तकनीक' के समर्थक यह दावा करते हैं कि जब यह अपने पूरे वज़ूद से आएगी तो धरती का नामोनिशान मिट जाएगा और नैनो रोबोट की फ़ौज स्वनिर्मित होकर पूरी तरह क्षत-विक्षत शव को भी पलक झपकते ही चुस्त-दुरुस्त इंसान में तबदील करने में सक्षम होगी।

(ख) इसकी असीमित शक्ति से आशंकित विरोधियों का यह मत है कि यह मिस्र के पिरामिडों में सोई ममियों से भी ज़्यादा अभिशप्त है। क्योंकि इससे होने वाले विनाश अत्यधिक भयावह हो सकते हैं।

(ग) नैनो तकनीक विज्ञान का एक आविष्कार है जिसके द्वारा भविष्य में मुश्किल से मुश्किल कार्य को भी करना संभव होगा। नैनो तकनीक का उपयोग कर जीवन को अधिक सरल बनाया जा सकता है।

(घ) औज़ारों को बेहतर बनाने के सिलसिले से मनुष्य ने प्रकृति में अपने सुविधानुसार कई बदलाव लाए। इस औद्योगिक क्रांति के परिणाम स्वरूप मानव प्रकृति का नियंत्रक बन गया।

(ङ) कार्बन के परमाणुओं की एक खास बनावट से कोयला तैयार होता है, तो दूसरी खास बनावट उन्हें हीरे का रूप दे देती है। उपयोगिता तथा मुल्य के आधार पर दोनों में अंतर है। प्रकृति की ओर से दोनों में कोई विशेष अंतर नहीं है।

(च) नौनो तकनीक का सार, नौनो तकनीक का महत्व

Question: 2

देशभर में गणतंत्र दिवस धूमधाम से <u>मनाया</u> गया। इस वाक्य में 'मनाया' को पद क्यों कहा जा सकता है?

Solution:

यहाँ 'मनाया' पद है, शब्द नहीं है। वाक्य में प्रयुक्त होने के कारण 'मनाया' पद है। यह व्याकरणिक नियमों से बंधा हुआ है।

Question: 3

निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए –
(क) लड़कों का एक झुंड पतंग के पीछे-पीछे दौड़ा चला आ रहा था । (मिश्र वाक्य में)
(ख) भाई साहब ने उछलकर पतंग की डोर पकड़ ली। (संयुक्त वाक्य में)
(ग) ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी, जिसमें खुला चैलेंज दिया गया हो। (सरल वाक्य में)

Solution:

(क) लड़कों का एक झुंड था जो पतंग के पीछे-पीछे दौड़ा चला आ रहा था।
(ख) भाई साहब उछले और उन्होंने पतंग की डोर पकड़ ली।
(ग) ऐसी खुला चैलेंज देने वाली सभापहले नहीं की गई थी।

Question: 4

(क) निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह करके समास का नाम लिखिए -

(i) पत्र व्यवहार (ii) चक्रधर

(ख) निम्नलिखित विग्रहों के समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए–

(i) महान् है जो नायक
(ii) घर और परिवार

Solution:

(क) (i) पत्र व्यवहार - पत्र का व्यवहार (संबंध तत्पुरुष समास)
(ii) चक्रधर - चक्र को धारण करने वाला अर्थात श्री कृष्ण (बहुवृहि समास)
(ख) (i) महान् है जो नायक - महानायक (कर्मधारय समास)
(ii) घर और परिवार - घर-परिवार (द्वंद्व समास)

Question: 5

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए –
(क) शुद्ध आदर्श भी सोने के जैसे समान ही होते हैं।
(ख) सिपाही लौटकर मुड़ा और कर्नल को घूरता हुआ चला गया।
(ग) मैं यह बात तुम्हारे को नहीं बता सकता।
(घ) मुझे सौ रुपए चाहिएँ।

Solution:

(क) शुद्ध आदर्श भी सोने के समान ही होते हैं।
(ख) सिपाही मुड़ा और कर्नल को घूरता हुआ चला गया।
(ग) मैं यह बात तुम्हें नहीं बता सकता।
(घ) मुझे सौ रुपए चाहिए।

Question: 6

निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–
(क) हाथ पाँव फूल जाना
(ख) प्राणांतक परिश्रम करना
(ग) सिर पर तलवार लटकना
(घ) सपनों के महल बनाना

Solution:

(क) हाथ पाँव फूल जाना - (भयभीत हो जाना) शेर को अपने सामने आता देखकर मेरे तो हाथ-पाँव फूल गए थे।
(ख) प्राणांतक परिश्रम करना - (जीवन भर मेहनत करना) फादर कामिक बुल्के ने हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए प्राणांतक परिश्रम किया।
(ग) सिर पर तलवार लटकना - (खतरा करीब होना) जैसै-जैसे परीक्षा समीप आ रही है, मेरे सिर पर तलवार लटकती जा रही है।
(घ) सपनों के महल बनाना - (सुखद कल्पना करना) मैंने विदेश जाने के लिए जो सपनों का महल बनाया था वह पूरा न हो सका।

Question: 7

निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए-
(क) 'डायरी का एक पन्ना' पाठ के आधार पर लिखिए कि 26 जनवरी, 1931 का दिन विशेष क्यों था?
(ख) छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का क्या लाभ उठाया ? आपके विचार से छोटे भाई का व्यवहार उचित था या नहीं, तर्क सहित उत्तर लिखिए।
(ग) कर्नल कालिंज का खेमा जंगल में क्यों लगा हुआ था?
(घ) 'प्रेम सबको जोड़ता है।' 'तताँरा-वामीरो कथा' पाठ के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

Solution:

(क) देश का स्वतंत्रता दिवस एक वर्ष पहले इसी दिन मनाया गया था। इससे पहले स्वतंत्रता संग्राम में बंगाल वासियों की कोई भूमिका नहीं थी। अब वे प्रत्यक्ष तौर पर आंदोलन से जुड़ गए। इसलिए यह दिन सभी के लिए महत्वपूर्ण था। कलकत्ता वासियों के ऊपर लगा कलंक मिट गया था।

(ख) छोटे भाई बड़े भाई की नरमी का अनुचित लाभ उठाने लगे। इस पर छोटा भाई पास हो गया तो उसका आत्मसम्मान और भी बढ़ गया। बड़े भाई का रौब नहीं रहा, वह आज़ादी से खेलकूद में जाने लगा, वह स्वच्छंद हो गया। उसे विश्वास हो गया कि वह पढ़े न पढ़े पास हो जाएगा। इसलिए उसके मन से बड़े भाई साहब का डर खत्म हो गया था। बड़े भाई के प्रति छोटे भाई द्वारा ऐसा किया जाना अनुचित था।

(ग) कर्नल कांलिज, वज़ीर अली को गिरफ़्तार करने के लिए जंगल में खेमा डाले बैठा था। पूरी फौज उसके साथ थी। गुप्त सुत्रों से यह पता चला था कि वज़ीर अली इन्हीं जंगलों में है। अंग्रेज़ी सरकार को उससे खतरा था। इसलिए उसे पकड़ने के लिए सिपाही जंगल में खेमा डाले बैठे थे।

(घ) तताँरा-वामीरो के गाँव वालों में पहले आपसी संबंध नहीं थे। विवाह तो दूर वे आपस में बात भी नहीं करते थे परन्तु इनकी त्यागमयी मृत्यु के बाद दोनों के गाँव में आपसी संबंध बनने लगे और वैवाहिक संबंध भी बनने लगे। इनके प्रेम से प्रभावित होकर दोनों गाँव अलग होते हुए भी भावनात्मक रूप से जुड़े हुए थे। अतः इससे यह प्रमाणित होता है कि प्रेम सबको जोड़ता है।

Question: 8

लगभग 80-100 शब्दों में उत्तर लिखिए -
'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' से क्या अभिप्राय है? गांधीजी 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' थे, कैसे?

OR

प्रकृति के साथ मानव के दुर्व्यवहार और उसके परिणामों को अब कहाँ दूसरों के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

Solution:

जो लोग आदर्श बनाते हैं और व्यवहार के समय उन्हीं आर्दशों को तोड़ मरोड़ कर अवसर का लाभ उठाते हैं, उन्हें प्रेक्टिकल आइडियालिस्ट कहते हैं। गाँधीजी कभी आदर्शों को व्यवहारिकता के स्तर पर गिराते नहीं थे बल्कि व्यवहारिकता को आदर्शों के स्तर तक ऊँचा ले जाते थे। गाँधीजी में नेतृत्व की अद्‌भुत क्षमता थी। अपनी इसी क्षमता के बल पर उन्होंने अहिंसा के मार्ग पर चलकर पूर्ण स्वराज की स्थापना की।

OR

प्रकृति के साथ मानव का दुर्व्यवहार दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। प्रतिदिन आबादी बढ़ रही है और बिल्डर नई-नई इमरातें बनाने के लिए वन जंगल तो खत्म कर रहे हैं। साथ ही समुद्र के किनारे इमारतें बनाने के कारण समुद्र को पीछे किया जाता है। इसके कारण प्रकृति का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। प्रकृति में

आए असंतुलन का कारण निरंतर पेड़ों का कटना, समुद्र को बाँधना, प्रदूषण और बारूद की विनाश लीला है। जिसके कारण भूकंप, अधिक गर्मी, वक्त बेवक्त की बारिश, अतिदृष्टी, साइकोन आदि और अनेक बिमारियाँ प्रकृति में आए असंतुलन का परिणाम है।

पर्यावरण असंतुलित होने का सबसे बड़ा कारण आबादी का बढ़ना है जिससे आवासीय स्थलों को बढ़ाने के लिए वन, जंगल यहाँ तक कि समुद्रस्थलों को भी छोटा किया जा रहा है। पशु-पक्षियों के लिए स्थान नहीं है। इन सब कारणों से प्राकृतिक का सतुंलन बिगड़ गया है और प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ती जा रही हैं। कहीं भूकंप, कहीं बाढ़, कहीं तूफ़ान, कभी गर्मी, कभी तेज़ वर्षा इनके कारण कई बिमारियाँ हो रही हैं। इस तरह पर्यावरण के असंतुलन का जन जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

Question: 9

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए-
(क) 'आत्मत्राण' कविता में कवि विपदा में ईश्वर से क्या चाहता है और क्यों?
(ख) 'है टूट पड़ा भू पर अंबर!' 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में कवि ने ऐसा क्यों कहा है?
(ग) कबीर निंदक को अपने निकट रखने का परामर्श क्यों देते हैं?
(घ) 'द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर'। इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

Solution:

(क) कवि करुणामय ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है कि उसे जीवन की विपदाओं से दूर रहने की शक्ति दे ताकि वह इन मुश्किलों पर विजय पा सके। ईश्वर पर उसका विश्वास अटल रहे। कवि का कहना है कि हे ईश्वर मैं यह नहीं कहता कि मुझ पर कोई विपदा न आए, मेरे जीवन में कोई दुख न आए बल्कि मैं यह चाहता हूँ कि मुझमें इन विपदाओं को सहने की शक्ति दें।

(ख) सुमित्रानंदन पंत जी ने इस पंक्ति में पर्वत प्रदेश के मूसलाधार वर्षा का वर्णन किया है। पर्वत प्रदेश में पावस ऋतु में प्रकृति की छटा निराली हो जाती है। कभी-कभी इतनी धुआँधार वर्षा होती है मानो आकाश टूट पड़ेगा।

(ग) कबीर का कहना है कि हम अपने स्वभाव को निर्मल, निष्कपट और सरल बनाए रखना चाहते हैं तो हमें अपने आसपास निंदक रखने चाहिए ताकि वे हमारी त्रुटियों को बता सके। निंदक हमारे सबसे अच्छे हितैषी होते हैं। उनके द्वारा बताए गए त्रुटियों को दूर करके हम अपने स्वभाव को निर्मल बना सकते हैं।

(घ) इस पद में मीरा ने कृष्ण के भक्तों पर कृपा दृष्टि रखने वाले रुप का वर्णन किया है। वे कहती हैं - "हे हरि ! जिस प्रकार आपने अपने भक्तजनों की पीड़ा हरी है, मेरी भी पीड़ा उसी प्रकार दूर करो। जिस प्रकार द्रोपदी का चीर बढ़ाकर, प्रह्लाद के लिए नरसिंह रुप धारण कर आपने रक्षा की, उसी प्रकार मेरी भी रक्षा करो।" इसकी भाषा ब्रज मिश्रित राजस्थानी है।

Question: 10

लगभग 80-100 शब्दों में उत्तर लिखिए–
'मनुष्यता' कविता में कवि किन-किन मानवीय गुणों का वर्णन करता है? आप इन गुणों को क्यों आवश्यक समझते हैं, तर्क सहित उत्तर लिखिए।

OR

सीमा पर भारतीय सैनिकों के द्वारा सहर्ष स्वीकारी जा रही कठिन परिस्थितियों का उल्लेख कीजिए और प्रतिपादित कीजिए कि 'कर चले हम फ़िदा' गीत सैनिकों के हृदय की आवाज़ है।

Solution:

'मनुष्यता' कविता में मनुष्यता को मानव का परम धर्म कहा गया है। उदार व्यक्ति परोपकारी होता है। अपना पूरा जीवन पुण्य व लोकहित कार्यो में बिता देता है। किसी से भेदभाव नहीं रखता, आत्मीय भाव रखता है। कवि भी उसके गुणों की चर्चा करते हैं। वह निज स्वार्थों का त्याग कर जीवन का मोह भी नहीं रखता। कवि दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर त्याग और बलिदान का संदेश देता है कि किस प्रकार इन लोगों ने अपनी परवाह किए बिना लोक हित के लिए कार्य किए।

दधीचि ने देवताओं की रक्षा के लिए अपनी हड्डियाँ दान दी, कर्ण ने अपना सोने का रक्षा कवच दान दे दिया, रति देव ने अपना भोजनथाल ही दे डाला, उशीनर ने कबूतर के लिए अपना माँस दिया इस तरह इन महापुरुषों ने मानव कल्याण की भावना से 'पर' हेतु जीवन दिया। सभी मनुष्य आपस में भाई बंधु हैं क्योंकि सभी का पिता एक ईश्वर है। इसलिए सभी को प्रेम भाव से रहना चाहिए, सहायता करनी चाहिए। मनुष्य को नि:स्वार्थ जीवन जीना चाहिए। वर्गवाद, अलगाव को दूर करके विश्व बंधुत्व की भावना को बढ़ाना चाहिए। धन होने पर घमंड नहीं करना चाहिए तथा खुद आगे बढ़ने के साथ-साथ औरों को भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देनी चाहिए।

OR

'कर चले हम फ़िदा' गीत में बलिदान की भावना स्पष्ट रुप से झलकती है। इसलिए यह किसी एक विशेष व्यक्ति का गीत न बनकर सभी भारतीय सैनिकों का गीत बन गया। इस गीत के माध्यम से कवि ने मनोभावों को शब्द दिए हैं। चीनी आक्रमण के समय भारतीय जवानों ने हिमालय की बर्फ़ीली चोटियों पर लड़ाई लड़ी।

इस बर्फ़ीली ठंड में उनकी साँस घुटने लगी, साथ ही तापमान कम होने से नब्ज़ भी जमने लगी परन्तु वे किसी भी बात की परवाह किए बिना आगे बढ़ते रहे और हर मुश्किल का सामना किया। कवि ने 'साथियों' शब्द का प्रयोग सैनिक साथियों व देशवासियों के लिए किया है। सैनिकों का मानना है कि इस देश की रक्षा हेतु हम बलिदान की राह पर बढ़ रहे हैं। हमारे बाद यह राह सूनी न हो जाए। सभी सैनिकों व देशवासियों को इससे सतर्क रहना होगा।

Question: 11

लगभग 60-70 शब्दों में उत्तर लिखिए-

(क) हरिहर काका अनपढ़ थे लेकिन अपने अनुभव और विवेक से दुनिया को बेहतर समझते थे, उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ख) टोपी ने इफ़्फ़न की दादी से अपनी दादी बदलने की बात क्यों कही होगी? इससे बाल मन की किस विशेषता का पता चलता है?

Solution:

(क) हरिहर काका अनपढ़ थे फिर भी उन्हें दुनियादारी की बेहद समझ थी। उनके भाई लोग उनसे ज़बरदस्ती ज़मीन अपने नाम कराने के लिए डराते थे तो उन्हें गाँव में दिखावा करके ज़मीन हथियाने वालो की याद आती है। काका ने उन्हें दुखी होते देखा था। इसलिए उन्होंने ठान लिया था चाहे मंहत उकसाए चाहे भाई दिखावा करे वह ज़मीन किसी को भी नहीं देंगे। एक बार मंहत के उकसाने पर भाइयों के प्रति धोखा नहीं करना चाहते थे परन्तु जब भाइयों ने भी धोखा दिया तो उन्हें समझ में आ गया उनके प्रति उन्हें कोई प्यार नहीं है। जो प्यार दिखाते हैं वह केवल ज़ायदाद के लिए है।

(ख) इफ़्फ़न की दादी टोपी को बहुत प्यार करती थीं। उनकी मीठी-मीठी बोली उसे तिल के लड्डू या शक्कर□गुड जैसी लगती थी। टोपी की माँ भी ऐसा ही बोलती थीं परन्तु उसकी दादी उसे बोलने नहीं देती थी। उधर इफ़्फ़न के दादा जी व अम्मी को उनकी बोली पंसद नहीं थी। अत: इफ़्फ़न की दादी और टोपी की

माँ दोनों एक स्वर की महिलाएँ थीं। यही सोचकर टोपी ने दादी बदलने की बात की। इस घटना से बाल मन की निश्छलता का पता चलता है।

Question: 12

आप विद्यालय की छात्र-परिषद् के सचिव हैं। स्कूल के बाद विद्यार्थियों को नाटक का अभ्यास करवाने के लिए अनुमति माँगते हुए प्रधानाचार्य को लगभग 80-100 शब्दों में पत्र लिखिए।

OR

अस्पताल कर्मचारियों के सद्व्यवहार की प्रशंसा करते हुए मुख्य चिकित्सा अधिकारी को लगभग 80-100 शब्दों में पत्र लिखिए।

Solution:

परीक्षा भवन,
परीक्षा केन्द्र।
दिनांक : ....

सेवा में,
प्रधानाचार्य जी,

राजकीय उच्चतम माध्यमिक विद्यालय,
कठवारिया सराय,
नई दिल्ली।

विषय - स्कूल के बाद विद्यार्थियों को नाटक अभ्यास कराने की अनुमति हेतु पत्र।

महोदय/महोदया,

मैं विद्यालय के छात्र परिषद का सचिव हूँ। मेरा नाम कमलेश है। हमारे विद्यालय के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष में दसवी कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा नाट्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इस नाटक को प्रस्तुत करने हेतु सभी छात्रों के लिए इसका अभ्यास करना आवश्यक है। विद्यालय की छुट्टी होने के बाद यदि सभी छात्र मिलकर इसका अभ्यास करें तो इस कार्यक्रम को सफल बनाया जा सकता है। यह कार्यक्रम इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस कार्यक्रम में अन्य विद्यालयों के शिक्षक और प्रधानाचार्य भी अतिथि स्वरूप सम्मिलित होने वाले हैं।

इसलिए मेरा आपसे अनुरोध है कि इन विद्यार्थियों को छुट्टी के बाद विद्यालय में रुकने की अनुमति दी जाए तथा एक उपयुक्त स्थान भी उपलब्ध कराया जाए। आशा करता हूँ कि आप मेरा यह अनुरोध स्वीकार कर विद्यार्थियों का हौसला बढ़ाएँगे।
आपका आज्ञाकारी

कमलेश
विद्यालय सचिव

OR

ए-बी-2, कालीबाड़ी,
नई दिल्ली।

दिनांक: ....

सेवा में,
चिकित्सा अधिकारी,

दिल्ली नगर निगम,
सिविल लाइन्स,
दिल्ली।

विषय: अस्पताल कर्मचारियों के सद्व्यवहार की प्रशंसा हेतु पत्र।

महोदय/महोदया,

मैं कालीबाड़ी क्षेत्र का निवासी हूँ। पिछले सप्ताह सड़क दुर्घटना के कारण मुझे निकटवर्ती अस्पताल गुरुतेग बहादुर अस्पताल में भर्ती करवाया गया। डाक्टरों के उचित उपचार और कर्मचारियों द्वारा की गई देखभाल से मैं अब स्वस्थ हूँ। वैसे तो यह उनका कर्तव्य है, परंतु कर्तव्य के अलावा भी सभी कर्मचारियों ने मेरा बहुत ध्यान रखा। परिवार के न होते हुए भी एक परिवार की तरह मेरी देख-रेख की। उस समय मुझे रक्त की आवस्यक्ता थी। मेरे रक्त के समान रक्त न मिलने की स्थिति में उनमें से एक कर्मचारी जिसका नाम विनय रघुनाथ है उन्होंने अपना रक्त दे कर मेरे प्राणों की रक्षा की। यह उनके उदार हृदय का ही प्रमाण है। वे वहाँ गार्ड का कार्य करते हैं। मानवता के इस कार्य को अवश्य सराहा जाना चाहिए ताकि सभी लोगों के लिए यह घटना प्रेरणा बने।

आपसे सविनय निवेदन है कि आप इन्हें पुरस्कृत कर सम्मानित करने की कृपा करें। हम सब आपके सदा आभारी रहेंगे।

धन्यवाद,

भवदीय,
शशांक सिंह

Question: 13

निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए:

(क) सत्संगति

• सत्संगति का अर्थ

• सत्संगति का महत्त्व

• कुसंगति से हानि

(ख) हमारी मेट्रो

• भारत की प्रगति का नमूना

• लोकप्रियता के कारण

• मेट्रो का विस्तार

(ग) अनुशासन क्यों?

- अर्थ
- आवश्यकता
- प्रभाव

Solution:

(क) सत्संगति

संगति मनुष्य के लिए बहुत आवश्यक है। संगति का अर्थ होता है साथ। मनुष्य पर साथ का विशेष प्रभाव देखा जाता है। यदि गौर किया जाए तो संगति के प्रभाव को अनदेखा भी नहीं किया जा सकता है। संगति दो प्रकार की होती है- सत्संगति और कुसंगति। मनुष्य को यह तय करना होता है कि वह अपने जीवन में किस प्रकार की संगति करता है। संगति मनुष्य के जीवन को चमत्कारिक ढंग से प्रभावित करती है। यदि मनुष्य विद्वान की संगति करता है, तो वह विद्वान न बने परन्तु मूर्ख भी नहीं रहता। विद्वानों के साथ उठने-बैठने के कारण उसे समाज में प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त होता है।

अच्छी संगति उसके व्यक्तित्तव को निखारती है। उसे मार्ग दिखाती है। यदि मित्र अच्छा है, तो उसका जीवन सफल हो जाता है। इसके विपरीत मनुष्य यदि कुसंगति वाले लोगों के साथ उठता बैठता है, तो वह स्वयं के लिए मुसीबतों का मार्ग खोल देता है। एक चोर के संगत में उठने-बैठने से मन में भी उसी प्रकार के कुविचार आने लगते हैं। यदि वह स्वयं को बचा भी लेता है तो लोग उसके विषय में गलत धारणा बना लेते हैं। अन्य लोग उनसे कतराने लगते हैं। समाज में उसकी प्रतिष्ठा पर दाग लग जाता है। लोग उसका भरोसा नहीं करते हैं। इसलिए संगति का मनुष्य के जीवन पर विशेष प्रभाव देखा गया है।

इसे नकारना हमारे लिए संभव नहीं है। इसलिए तो कहा गया है जैसे जिसकी संगति होती है, वैसा उसका रुप होता है।प्राचीन समय से धर्मग्रंथ तथा संत लोग मनुष्य को सत्संगति के लिए प्रेरित करते आए हैं। उनके अनुसार सत्संगति में बैठकर मूर्ख मनुष्य भी विद्वान बन जाता है। सत्संगति के बुरे प्रभाव नहीं देखे जाते हैं। यही कारण है कि इसे सत्संगति कहा गया है। सत्संगति में बैठकर मनुष्य कुछ न कुछ सीखता ही है। सत्संगति से तात्पर्य होता है अच्छी संगति।

बचपन से ही हम संबंधियों, मित्रों पड़ोसियों के मध्य उठते-बैठते हैं। इनसे अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं तथा दूसरों के विचारों को ग्रहण करते हैं। हम अपने मतानुसार अच्छी बातों को ग्रहण कर बुरी बातों को नकार देते हैं। यह बात हुई एक परिपक्व व्यक्ति की। परन्तु एक छोटे बच्चे की स्थिति इससे भिन्न होती है। वह यह तय नहीं कर पाता है कि किस प्रकार की संगति उसके लिए उचित होती है।

अतः वह गलत संगति में पड़ जाता है। वह ऐसे लोगों के साथ रहने लगता है, जिनका आचार-व्यवहार अच्छा नहीं होता। वे बुरी आदतों से ग्रस्त होते हैं। उनके साथ रहते-रहते वह भी इन विकारों का शिकार हो जाता है। उसके बाद यदि वह निकलना भी चाहे, तो लंबे समय तक बुरी संगति काली छाया के समान जीवन में बनी रहती है। हमारे संतों ने अनेक बार यह कहा है कि यदि अपना उत्थान और विकास चाहते हो तो विद्वान और अच्छे लोगों की संगति में विचरण करो। यह तुम्हारे व्यक्तित्व और जीवन को सुंदर तथा प्रगतिशील बना देगा। इस तरह से हम कह सकते हैं कि सत्संगति मनुष्य के विकास के लिए परम आवश्यक है।

(ख) हमारी मेट्रो

दिल्ली ने हमेशा अपना इतिहास रचा है। इसमें चौड़ी सड़कें, फ्लाईओवर की रेंज और फुट ओवरब्रिज और वर्तमान में मेट्रो हैं। मेट्रो एक शानदार गौरव है जो दिल्ली की प्रगति को गति देता है।

दिल्ली ने पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या में भारी वृद्धि का अनुभव किया है। बहुत से लोग यहाँ काम करने आते हैं। दिल्ली की सड़कों पर यातायात साइकिल, स्कूटर, बस, कार और रिक्शा का मिश्रण है। इसके

परिणामस्वरूप ईंधन अपव्यय, पर्यावरण प्रदूषण और सड़क दुर्घटनाओं की बढ़ती संख्या है। बसें भी भीड़भाड़ वाली हैं। जब तक यहाँ मेट्रो रेल की शुरुआत नहीं हुई थी, तब तक दिल्ली में आवागमन एक बड़ी समस्या थी।

मेट्रो यात्रियों के लिए समय बचाने में मदद करती है। दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) के अधिकांश स्थानों पर मेट्रो पहुँच चुकी है। मेट्रो दिल्ली के लिए एक वरदान है जहाँ लोग अपने कार्यालयों तक पहुँचने के लिए मेट्रो का उपयोग करते हैं। यह कार्यालय के समय सड़कों पर वाहनों की संख्या को कम करता है। इससे ट्रैफिक जाम कम होता है। मुख्य रूप से, मेट्रो आवागमन का एक तेज़ तरीका है।

मेट्रो कॉरिडोर को जमीन पर और आंशिक रूप से ऊंचा बनाया गया है। पूरे दिन पूरे शहर में मेट्रो चलती है। आम लोगों के लिए आवागमन सुगम और आसान बनाया गया है। मेट्रो रेल के स्टेशन स्वच्छ और व्यवस्थित हैं। यात्रियों की सुरक्षा और संरक्षा को ध्यान में रखते हुए देखभाल की गई है। ट्रेन के कोच वातानुकूलित हैं। मेट्रो में लगभग 240 लोगों के बैठने की जगह है और यात्रा करते समय 300 यात्री खड़े हो सकते हैं। ट्रेन के रूट की समय-समय पर घोषणा की जाती है।

मेट्रो दिल्ली के बड़े शहर को बहुत कुशलता से जोड़ने में सक्षम है। शहर के विभिन्न हिस्सों को पीले, नीले, लाल और हरे रंग की लाइनों के विभिन्न कनेक्शनों का उपयोग करके मेट्रो के माध्यम से जोड़ा जाता है। ये रेखाएँ अलग-अलग मार्ग हैं। हर रूट पर मेट्रो रेल की आवृत्ति अच्छी है। यह हर 3-5 मिनट में आता है।

दिल्ली के लोग अब मेट्रो के कामकाज के आदी हैं। यात्रियों की सुविधा के लिए उचित निर्देश दिए गए हैं। ये यात्री अब कुछ ही समय में बड़ी दूरी तय करते हैं। मेट्रो दिल्ली के लिए एक वरदान साबित हुई है। कोच और आवृत्ति की संख्या में वृद्धि होने के बावजूद मेट्रो में यात्रियों की आबादी तेज़ी से बढ़ रही है।

(ग) अनुशासन क्यों?

अनुशासन मनुष्य के विकास के लिए बहुत आवश्यक है। यदि एक समाज और देश में लोग अनुशासन में चलते हुए जीवनयापन करेंगे और अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह पूरी निष्ठा से करेंगे, तो देश के और अपने विकास को सफलता के शिखर में पहुँचा सकते हैं। मनुष्य द्वारा नियमों में रहकर नियमित रूप से अपने कार्य को करना अनुशासन कहलाता है। यदि किसी के अंदर अनुशासनहीनता होती है, तो वह स्वयं के लिए कठिनाईयों की खाई खोद डालता है। उसका जीवन सदा अस्त-व्यस्त रहता है। यदि मनुष्य अनुशासन से जीवनयापन करता है, तो वह स्वयं के लिए सुखद और उज्जवल भविष्य की राह निर्धारित करता है।

विद्यार्थी हमारे देश का मुख्य आधार स्तंभ हैं। यदि इनमें अनुशासन की कमी होगी, तो हम सोच सकते हैं कि देश का भविष्य कैसा होगा। विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का बहुत महत्व होता है। उनके जीवन में अनुशासन नहीं होगा, तो वे जीवन की दौड़ में पिछड़ जाएँगे। उनकी अनुशासनहीनता उसे आलसी और भाग्यवादी बना सकती है। विद्यार्थी के लिए अनुशासन में रहना और अपने सभी कार्यों को व्यवस्थित रूप से करना बहुत आवश्यक है।

यह वह मार्ग है, जो जीवन में सफलता प्राप्त करवाता है। विद्यार्थियों को बचपन से ही अनुशासन में रखना आवश्यक है। अनुशासन में रहने की सर्वप्रथम शिक्षा उन्हें अपने घर से ही प्राप्त होती है। विद्यार्थी को चाहिए कि विद्यालय में रहकर विद्यालय के बनाए सभी नियमों का पालन करें। अध्यापकों द्वारा पढ़ाए जा रहे सभी पाठों का अध्ययन पूरे मन से और समय से करे। प्रात:काल समय पर उठे। अपने अध्यापकों द्वारा घर के लिए दिए गए गृहकार्य को नियमित रूप से करे। अनुशासन हमें समय का मूल्य बताता है। अनुशासन में रहकर हम समय की गति को नियंत्रित किया जा सकता है। अनुशासन के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है।

Question: 14

'फास्ट-फूड' के बढ़ते प्रचलन के बारे में बड़े और छोटे भाई के बीच होने वाले संवाद को लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए।

OR

बोर्ड-परीक्षाओं की तैयारी के संबंध में दो मित्रों के बीच होने वाले संवाद को लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए।

Solution:

(घर के बैठक का दृष्य। दो भाई आपस में बात करते हैं।)
बड़ा भाई – भाई आज माँ ने पनीर बनाया है।
छोटा भाई – मगर भाई मैं अभी बाहर से पिज्जा खाकर आया हूँ।

बड़ा भाई (छोटे भाई को डाँटते हुए) – फिर से तुमने फास्टफूड खाया है। भाई बाहर के खाने की बुरी आदत लग जाती है।
छोटा भाई – क्या करूँ । हर रोज़ एक खाना खाकर उब गया हूँ।

बड़ा भाई (समझाते हुए) – भाई घर का खाना पौष्टिक होता है। बाहर लगातार खाने के कारण बजट पर भी असर पड़ता है और सेहत पर भी।
छोटा भाई – सब जानता हूँ भाई। मुझे माँ के हाथों का खाना बहुत पसंद है, मगर दोस्त के सामने वो खाना खाऊँगा तो वह मुझे चिढ़ाएँगे।
बड़ा भाई – तुम जब बीमार पड़ते हो तब माँ ही सेवा करती है। पेट के लिए फास्टफूड नुकसानदायक होता है, इससे हाज़मे पर भी असर पड़ता है।

छोटा भाई – हाँ भाई ।
बड़ा भाई – फास्टफूड की वजह से तुम्हारा स्वास्थ हमेशा खराब होता है। पेट की बीमारियाँ हो सकती हैं। शरीर पर वसा की मात्रा बढ़ती है।

छोटा भाई – ठीक है भाई आज से धीरे-धीरे फास्टफूड खाना बंद कर दूँगा।
बड़ा भाई – ठीक है।

OR

(रात का समय है। सड़क पर दो मित्र टहलते समय मिलते हैं।)
विनोद – अरे प्रमोद ! तुम इतनी रात कहाँ से आ रहे हो ?

प्रमोद – क्या बताऊँ विनोद ! राम चाचा से प्रश्न का हल समझने गया था।
विनोद – "दसवीं कक्षा की परीक्षा समीप आ रही है।"

प्रमोद – "हाँ, इस बार अधिक ध्यान देकर पढ़ाई करनी पड़ेगी। इसलिए ज्यादा मेहनत करनी पड़ रही है। "
विनोद – "हाँ, बोर्ड की परीक्षा है, विस्तार से पढ़ना पड़ेगा।"

प्रमोद – "मैं तो रोज़ सुबह जल्दी उठकर भी पढूँगा। उस समय ध्यान केन्द्रित करना भी आसान होता है।"
विनोद – "मुझे तो रात को देर तक पढ़ने की आदत है। उस समय शांति होती है और पाठ ज्यादा आसानी से याद हो जाता है।"

प्रमोद – "अगर अच्छे अंक आ गए तो मैं तो मेडिकल विषय लूँगा।"
विनोद – "मेरी रूचि तो नॉन-मेडिकल में है।"
प्रमोद – "क्यों न हम मिल कर पढ़ाई करें ?"

विनोद – "हाँ इस प्रकार हम परीक्षा के लिए पूर्ण रूप से तैयार हो जाएँगे।"
प्रमोद – "ऐसा करने से हम परीक्षा में एक दूसरे की सहायता कर सकेंगे।

Question: 15

कोई कंपनी 'लेखनी' नाम का नया पेन बाज़ार में लाना चाहती है। उसके लिए लगभग 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

OR

ए.टी.एम. केंद्रों पर सावधानी बरतने संबंधी निर्देश देते हुए पंजाब नेशनल बैंक की ओर से लगभग 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

Solution:

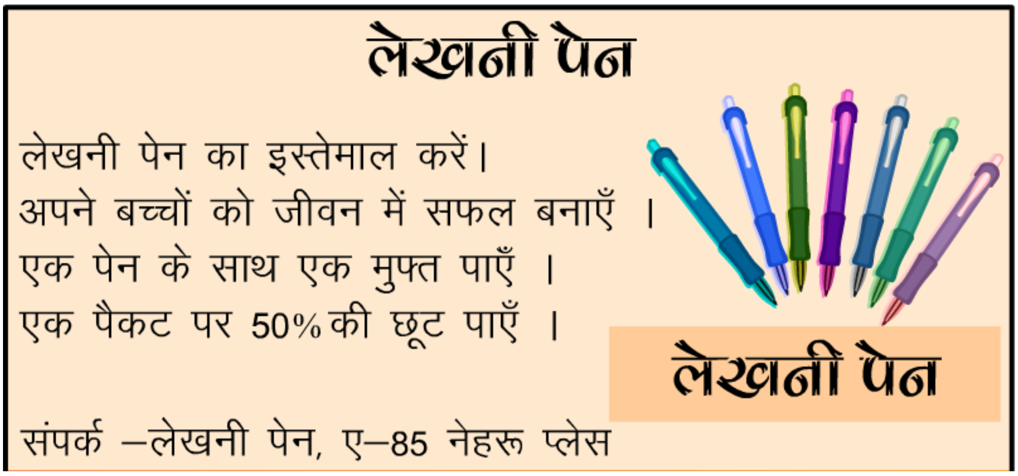

OR

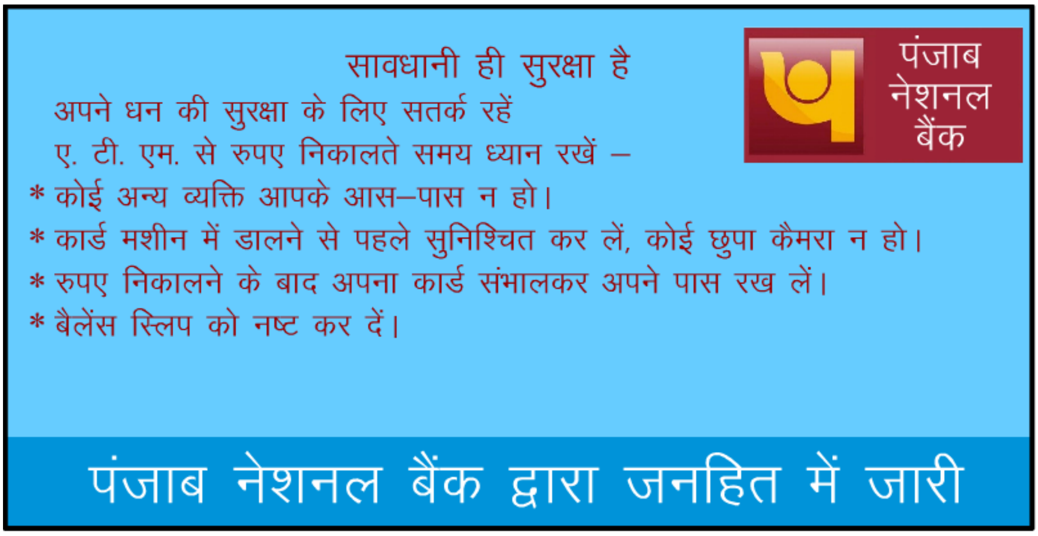

Question: 16

आप अपनी कॉलोनी की कल्याण परिषद् के अध्यक्ष हैं। अपने क्षेत्र के पार्कों की साफ़ सफ़ाई के प्रति जागरूकता लाने हेतु कॉलोनी वासियों के लिए 40-50 शब्दों में सूचना तैयार कीजिए।

OR

विद्यालय की सचिव की ओर से 'समय-प्रबंधन' विषय पर आयोजित होने वाली कार्यशाला के लिए 40-50 शब्दों में एक सूचना तैयार कीजिए।

Solution:

नीलकंठ अपार्टमेंट
नई दिल्ली
सूचना

दिनांकः ....

पार्क की साफ–सफाई के लिए आवश्यक सूचना

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दो अक्टूबर को स्वच्छ भारत अभियान मनाने की घोषणा की है। भारत को स्वच्छ रखने की यह मुहिम निश्चय ही काबिल–तारीफ़ है। हम सभी को इस अभियान से जुड़ना चाहिए। अतः इस कार्य को साकार रूप प्रदान करने के लिए आप सभी से यह विनम्र निवेदन है कि 20 मार्च को हमारी कॉलोनी के पार्क की साफ–सफाई के इस कार्य में हमारा सहयोग करें।

..........हस्ताक्षर..........
विनय जोशी
अध्यक्ष (कल्याण परिषद)

एंजिल पब्लिक स्कूल
नई दिल्ली
सूचना

दिनांकः ....

समय–प्रबंधन कार्यशाला के लिए आवश्यक सूचना

आप सभी को सूचित किया जाता है कि विद्यालय की ओर से एक कार्यशाला का आयोजन किया गया है। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य समय का सदुपयोग करने के लिए विद्यार्थियों को जागरूक करना है। इस कार्यशाला में समय–प्रबंधन के विषय में चर्चा होगी। आप सभी से यह अनुरोध है कि सही समय पर आकर इस कार्यशाला को सफल बनाने में सहयोग करें।

..........हस्ताक्षर..........
प्रभाकर मिश्रा
सचिव (विद्यालय परिषद)